भौतिक और अध्यात्म विज्ञान

— प्रवर्तक श्री रमेश मुनि

वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आज भौतिक विज्ञान के विकास के चरण बढ़ते चले जा रहे हैं। उसका कार्य-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र आशातीत व्यापक हो चुका है। नित्य नये-नये आविष्कारों और अनुसन्धानों ने सचमुच मानव जगत् को चमत्कृत कर दिया है। यही कारण है कि आज हर एक गाँव, नगर, प्रान्त, राज्य, देश, समाज उन नये-नये आविष्कारों (भौतिक विज्ञान) के साथ जुड़कर आगे बढ़ने के लिए लालायित है। आज का प्रगतिशील तथा अप्रगतिशील समाज न वैज्ञानिक साधन-प्रसाधनों से अपने को अलग-थलग रखना चाहता है और न अपने को उनसे वंचित ही।

क्योंकि—"प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्" के अनुसार आज भौतिक-विज्ञान की अनेक विशेषताएँ प्रत्यक्ष हो चुकी हैं। कृत कार्यकलापों की अच्छी या बुरी प्रतिक्रिया उपस्थित करने में वह देर नहीं करता। एक सेकण्ड में हजारों-हजार बल्बों में विद्युत तरंगें तरंगित होने लगती हैं। कुछ ही मिनटों-घंटों में हजारों मील का फासला तय करवा देता है। आंख की पलक झपकते इतने समय में हजारों मील दूर रहते हुए वे गायक, वक्ता, चित्र के रूप में ही नहीं, आंखों के सामने नाचते, घूमते, दिखने लग जाते हैं। गुरुतर संख्या वाले गणित के हिसाबों को देखते-देखते कम्प्यूटर सही-सही आँकड़ों में सामने ले आता है। उपग्रह अनन्त आकाश में उड़ानें भर रहा है। उसका नियन्ता धरती पर बैठा-बैठा निर्देशन दे रहा है, नियन्त्रण कक्ष (कंट्रोल-रूम) को सम्भाले बैठा है। बीस-पच्चीस कदम दूर बैठा मानव रिमोट कंट्रोल के माध्यम से टी० वी० को चालू कर रहा और बन्द भी, बीच में कोई माध्यम जुड़ा हुआ नहीं है।

वैज्ञानिक साधनों के कारण आज जल, थल और नभ मार्गों की भयावनी यात्रायें सुगम-सुलभ एवं निर्भय सी बन गई हैं। कई वैज्ञानिक उपकरण शरीर के अवयवों के स्थान पर कार्यरत हैं। एक्सरे मशीन शरीरस्थ बीमारियों को प्रत्यक्ष बता देती है। आज ऐसे भी संयंत्र उपलब्ध हैं, जो शारीरिक सन्तुलन को ठीक बनाए रखने में सहायता करते एवं हलन, चलन, कम्पन, स्पन्दन, धड़कन गति को बताने में सक्षम है। वैज्ञानिक साधनों के आधार पर यह पता लगा लिया जाता है कि अमुक खनिज भण्डार, धातु-गैस, रसायन या तरल पदार्थ अमुक स्थान पर धरती के गर्भ में समाहित है। हजारों मानव या पशु जगत जिस गुरुतर काम को करने में महिनों पूरे कर देते हैं, उसे कुछ समय में ही पूर्ण करने की क्षमता विज्ञान में निहित है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐसे भी साधन उपलब्ध हैं जिनका यथास्थान उपयोग करने पर बहरा व्यक्ति सुनने में, अन्धा देखने में और लंगड़ा-अपंग मानव चलने-फिरने, घूमने लग जाता है। मारक और हानिकारक उपकरण के बटन को दबाया कि हजारों-लाखों मानवों, पशु-पक्षियों, जानवरों का जीवन खतरे के बिन्दु को छूने की तैयारी में हो जाता है। उनके मस्तक पर मौत मंडराने लगती है।

ऐसे यन्त्रों का भी वैज्ञानिक परीक्षण हो चुका है जिनका यथास्थान समय पर उपयोग करने पर प्राणियों के स्वभाव और आदतों में तत्काल परिवर्तन-परिवर्धन देखा जा सकता है। अब स्वभाव बदलने की बात असम्भव नहीं रही। मानवों पर प्रयोग हो रहे हैं। पशुओं पर अनेक प्रयोग-परीक्षण हो चुके हैं। बन्दरों, मेढकों, चूहों और पेड़-पौधों पर प्रयोग हुए और हो रहे हैं। शरीरस्थ उन केन्द्रों का ठीक-ठीक पता लगाया जा चुका है, जिन्हें उत्तेजित करने पर प्राणी के स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है।

दो बिल्लियाँ हैं—एक के सिर पर इलेक्ट्रोड लगा कर उसके भूख-केन्द्र को शांत कर दिया गया। दोनों के सामने भोजन रखा गया। एक बिल्ली तत्काल उसे खाने लगी और दूसरी शान्त बैठी रही।

बन्दर के हाथ में केला दिया, वह खाने की तैयारी में था कि उसके सिर पर इलेक्ट्रोड लगाकर उसके भूख-केन्द्र को शान्त कर दिया गया। उसने तत्काल केला नीचे डाल दिया। आहार, भय, निद्रा और वासनाजन्य केन्द्रों को विद्युत झटके देकर शान्त कर दिया जाता है। विज्ञान ने उन सभी केन्द्रों को खोज निकाला है।

चूहे और बिल्ली का पारस्परिक जन्मजात वैर रहा है, परन्तु दोनों के मस्तक पर इलेक्ट्रोड लगा दिये गये। बस, न बिल्ली के मन में वैर, न चूहे के मन में भय पैदा हुआ। चूहा और बिल्ली दोनों सप्रेम आपस में खेलने लग गए। इस तरह स्वभाव परिवर्तन आज सम्भव हो गया है।

अमेरिका ने एक ऐसे मकान का निर्माण किया है, जिसमें अलग-अलग चार कमरे हैं। चारों में यन्त्र लगाए गए हैं। प्रथम यन्त्र को चालू करने पर उस कक्ष में वायु भर जाती है। दूसरे यन्त्र को चालू करने पर उसमें कृत्रिम बादल छा जाते है। तीसरे यन्त्र को प्रारम्भ करने पर बिजली-गर्जना और चौथे यन्त्र के बटन दबाने पर वर्षा होने लगती है।

अमेरिका में प्रातःकाल जो हरी घास थी, वह छः बजे से नौ बजे के बीच में मशीन द्वारा कागज के रूप में और प्रेस में छपकर अखबारों के रूप में दुनिया के सामने आ जाती है। केवल तीन घण्टे के अन्दर घास का अखबार के रूप में आ जाना विज्ञान की कितनी यड़ी करामात है।

इलेक्ट्रॉनिक 'रॉबोट' नाम के मानव का निर्माण किया गया है। यद्यपि उसमें आत्मा (Soul) का सद्भाव नहीं है परन्तु कृत्रिम आत्मा रूपी विद्युत का उसमें संचार है जिसके सहारे वह कई काम करता हुआ मानव की बड़ी सहायता करने में तत्पर है।

यह निर्विवाद सत्य है कि इलेक्ट्रॉनिक जगत् आविष्कार और अनुसन्धान के तौर पर काफी ऊँचाइयों को छूने लगा है। कल्पनातीत करिश्मे-करतब उपस्थित कर रहा है। आज विज्ञान ने भौतिक, रासायनिक व जीवविज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में काफी प्रगति की है तथापि निष्पक्ष दृष्टि से अगर चिंतन करें तो हम उसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आज प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक मानव समाज पूर्वापेक्षा अत्यधिक अशांत, उद्विग्न और आकुल-व्याकुल की स्थिति में हैं। विषमता, अनैतिकता से दम घुटता जा रहा है। क्लेष, द्वेष, वैर, विरोध, विश्वासघातमय प्रदूषणात्मक विषैली गैस से आज सभी भयाक्रांत हैं। इस इलेक्ट्रॉनिक युग में आज सभी अपने को विनाश से अरक्षित पा रहे हैं। समता, सहिष्णुता, सद्भावना, धीरता, गम्भीरता की पर्याप्त कमी महसूस कर रहे हैं। स्नेह, शान्ति, समर्पण भावों की तरंगें कम होती जा रही हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घर-घर और गाँव-गाँव में शुभ मंगल स्वराज का मधुमास क्यों नहीं खिला ? जबकि भौतिक सुख-साधनों की सभी क्षेत्रों में प्रचुरता परिलक्षित हो रही है। पग-पग और डग-डग पर साधन उपलब्ध हैं। कुछ भी हो, भौतिक विज्ञान का सर्वोपरि विकास हो जाने पर भी विज्ञान अपने-आप में अपूर्ण और अधूरा ही रहने वाला है। वह इसलिए भी कि भौतिक विज्ञान प्राणी जगत् के शारीरिक, मानसिक, वाचिक, इन्द्रिय, मनविषयक एवं पेट, परिवार,पद,प्रतिष्ठाओं की क्षणिक पूर्ति करने तक ही सफल रहा है। माना कि उसने संसार को कुछ सुख-सुविधा के लिए तीव्रगामी वाहनों का विकास कर, यात्रा की अनुकूलता दी, तरंगों पर कंट्रोल कर एक ज्वलंत समस्या का समाधान खोज निकाला, राकेट—उपग्रह शक्तियों की शोध कर भूगोल, खगोल सम्बन्धी जानकारियाँ दीं और टेलीफोन, टी० वी० का आविष्कार कर हजारों मील दूर रहे समाचारों से अवगत किया, कराया।

दूसरे पहलू से देखा जाय तो भौतिक विज्ञान से प्राणी जगत् की हानियां कम नहीं हुई हैं। विकास और विनाश दोनों पहलू भौतिक के रहे हैं। एक बाजू पर विकास और सुख-सुविधा का सरसब्ज बाग का लेबल लगा है तो दूसरी ओर विनाश और दुविधा का ज्वालामुखी छिपा हुआ है।

भोपाल में घटित गैस काण्ड के घाव अभी तक भरे नहीं हैं। विषाक्त गैस रिसने से हजारों नर-नारियों, बालकों की ज्योति को बर्बाद कर दिया, साथ ही पशु-पक्षी जगत् भी उससे बच नहीं पाया।

वस्तुतः वैज्ञानिक सुविधाजन्य प्रवृत्तियों से आज मानव-समाज सुविधाभोगी, अधिक आरामी अवश्य बना है किन्तु जीवन में निष्क्रियता-निष्कर्मण्यता का विस्तार हुआ है, साथ ही मानव परापेक्षी पंगु बनता हुआ व्यसन और फैशन की चकाचौंध में अपने को भूलता जा रहा है। यह सब क्या है ? इसे विज्ञान की देन समझना चाहिए। इस दृष्टिकोण से विज्ञान मानव-समाज के लिए वरदान नहीं अभिशाप बनता जा रहा है।

इस विज्ञान में सुन्दरता है किन्तु मूल तत्व शिव अर्थात् कल्याण का अभाव रहा है। प्रकृति का अन्वेषण-अनुसंधान करना, नाशवान वस्तुओं का परिवर्तन—परिवर्धन एवं नवनिर्माण करने तक ही विज्ञान की अगणित उपलब्धियाँ हस्तगत होने पर भी आज सामाजिक, राष्ट्रीय और पारिवारिक जीवन निराशा के झूले ही झूल रहा है। इन्द्रियजन्य सुख-सुविधा के साधनों की विपुलता ही सब-कुछ नहीं है; चिरस्थायी शांति एवं आत्मानन्द-आत्मधन आत्म-विकास सम्बन्धी समस्या का समाधान भौतिक विज्ञान में खोजने का मतलब होगा—रिक्तता से रिक्तता की ओर लक्ष्यविहीन अंधी दौड़ लगाने जैसी स्थिति !

वस्तुतः यथार्थ आत्मशांति के लिये प्रत्येक पिपासु मानव को अध्यात्म विज्ञान के दरवाजे खटखटाने होंगे। अध्यात्म विज्ञान के उद्गमदाता, द्रष्टा व सृष्टा भ० ऋषभदेव से महावीर प्रभृति व राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध आदि महात्माओं ने अध्यात्म-विज्ञानोदधि में अवगाहन किया, शनैः-शनैः साधना-उपासना की गहराइयों में उनकी चेतना पहुँची, चिंतन का मंथन हुआ, अंत में सर्वोपरि सर्वोत्तम आत्म-विकास का साध्य फल मोक्ष प्राप्त किया और कई करेंगे।

अध्यात्म-विज्ञान (Soul-Science) का कार्य-क्षेत्र, कर्म-क्षेत्र उभय जीवन अर्थात् लौकिक और लोकोत्तर जीवन को अन्तर्मुखी और ऊर्ध्वारोहण की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। अध्यात्म विज्ञान विकास के अवरोधक इन्द्रियों और मन के विषयों—शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श पर नियन्त्रण पाने के लिये ध्यानी-ज्ञानी प्रवृत्तियों और योगासन का विधान करता है। अहिंसा भगवती की अर्चा से सुख-शांति के स्रोतों का प्रस्फुटन, संयमी वृत्ति से अनैतिकता का अन्त, तपाराधना से शुभाशुभ कर्म-दर्गणा का आत्मस्वरूप से पृथक्करण होना और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उतने-उतने रूप में आत्म-स्वरूप में निखार आता चला जाता है। इस तरह सुप्त आत्मिक शक्तियों को जागृत होने का, आत्मिक ऊर्जा-ऊष्मा के उद्गम केन्द्रों को सक्रिय होने का अवसर मिलता है।

आत्म-विज्ञान की अनूठी विशेषता भास्कर की भांति तेजस्विता प्रखरता का प्रतीक रही है। जिसमें "सत्यं-शिवं-सुन्दरम्" इन तत्वों का समन्वित रूप ही उसकी सार्थकता, सम्पूर्णता और शाश्वतता स्वयंसिद्ध हैं। आत्म-विज्ञान जितना सत्य है, उतना ही सुन्दर और जितना सुन्दर उतना ही शिवदायक रहा है। यह विशेषता भौतिक विज्ञान में कहाँ ? अध्यात्म विज्ञान ने बताया, तू आत्मा है। जो तेरा स्वभाव है, वही तेरा धर्म है। जो कभी मिथ्या नहीं होता। तीनों काल में सत्य ही सत्य रहता है। चित् का अर्थ चैतन्य रूप; ज्ञान का प्रतीक, जो कभी जड़त्व में नहीं बदला, और आनन्दरूप जो कभी दुख में परिवर्तित नहीं हुआ। आत्मा का अपना धर्म यही है। आत्मा से भिन्न विजातीय कर्म के मेल के कारण ही यह सब दृश्यमान मिथ्या प्रपंच है। यही कारण है कि संसारी सभी आत्माओं में पर्याय की दृष्टि से विभिन्नता परिलक्षित होती है। विभिन्नता का अन्त ही अभिन्नता है। वही आत्मा का सर्वोपरि विकास है और उस विकास की बुनियाद रही है—अध्यात्म विज्ञान।

अध्यात्म विज्ञान ने जिस तरह जीव विद्या विज्ञान का विश्लेषण प्रस्तुत किया है उसी तरह जड़ जगत् का भी अति सूक्ष्म रीति से शोधन-अनुसंधान कर हेय-उपादेय का प्रतिपादन किया है। इतना ही नहीं अध्यात्म-विज्ञान की दूसरी विशेषता यह रही है कि वह पुनर्जन्म, परलोक, स्वर्ग-अपवर्ग आत्मा-परमात्मा, पुण्य-पाप, संसार-मोक्ष, धर्म-कर्म दृष्टि, ध्यान-ज्ञान, योग-अनुष्ठान, जीव-अजीव और जगत् इस तरह अध्यात्म एवं भौतिक विषयों का तलस्पर्शी अनुसंधान-अन्वेषण करता हुआ, वस्तु स्थिति का यथार्थ निर्देशन प्रत्यक्ष रूप से करा देता है। यही नहीं आत्मा के उन अज्ञात सभी गुण शक्तियों के केन्द्रों को उजागर में ले आता है।

साधक आत्मा नहीं चाहती कि मुझे भौतिक सम्पदा की प्राप्ति हो तथापि घास-फूस न्यायवत् अध्यात्म-साधना की बदौलत अनायास कई लब्धियों के अज्ञात केन्द्र खुल जाते हैं। साधक के चरणों में कई सिद्धियाँ लौटने लगती हैं। जैसे पांचों इन्द्रियाँ —श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना और स्पर्शन एक-एक विषय को अपना ग्राह्य बनाती रही हैं किन्तु जब आत्मविज्ञ साधक आत्मा को संभिन्न श्रोत नामक लब्धि की प्राप्ति हो जाती है, तब शरीर के दे अज्ञात केन्द्र स्वतः खुल जाते हैं और वह साधक आत्मा सभी इन्द्रियों से सुनने, देखने, सूंघने लगती है या इन लब्धि वाले साधक को रूप, रस, गंध और स्पर्शन का ज्ञान-अनुभव किसी भी इन्द्रिय से हो जाता है, उक्त विशेषता भौतिकविज्ञान में कहाँ ?

प्राणघातक बीमारियाँ जैसे—जलोदर, भंगदर, कुष्ठ, दाह, ज्वर, अक्षिशूल, दृष्टि-शूल और उदर-शूल इत्यादि रोग लब्धिधारी साधक के मुंह का थूक (अमृत) लगाने मात्र से मिट जाते हैं। चौदह पूर्व जितना लिखित अगाध साहित्य आगम वाङ्मय को यदि कोई सामान्य जिज्ञासु स्वाध्याय करने में पूरा जीवन खपा दे तो भी सम्पूर्ण स्वाध्याय नहीं कर पावेगा किन्तु वे लब्धि प्राप्त साधक केवल ४८ मिनट में सम्पूर्ण १४ (चौदह) पूर्व का अनुशीलन-परिशीलन करने में सफल हो जाते हैं। ऐसी एक नहीं अनेक सिद्धियां भ० महावीर के ज्येष्ठ अन्तेवासी गौतम-सुधर्मा गणधर के अलावा और भी अनेकों महामुनियों को प्राप्त थी।

अध्यात्म-विज्ञान-साधना की पृष्ठभूमि जब उत्तरोत्तर शुद्ध-शुद्धतर बनती चली जाती है, निखार के चरम बिन्दु को छूने लगती है, वहीं आत्म-परिष्कार की सर्वोत्तम कार्य-सिद्धि हो जाती है, तब आत्मा शनैः-शनैः मध्यस्थ राहों का अतिक्रमण करती हुई सम्पूर्ण विकास की सीमा तक पहुँच जाती है। सदा-सदा के लिये कृत-कृत्य हो जाती है। भूत, भविष्य, वर्तमान के समस्त गुण पर्यायों की ज्ञाता-दृष्टा बनकर सर्वज्ञ सर्वदर्शी प्रभु रूप हो जाती हैं। □

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org